खण्ड – 3 : प्रमुख विचारक – 2

इकाई – 1 : मैथ्यू आर्नल्ड

इकाई की रूपरेखा

3.1.0. उद्देश्य कथन
3.1.1. प्रस्तावना
3.1.2. मैथ्यू आर्नल्ड : व्यक्ति परिचय
  3.1.2.1. व्यक्तित्व
  3.1.2.2. कृतियाँ
3.1.3. मैथ्यू आर्नल्ड का काव्य चिन्तन
  3.1.3.1. संस्कृति और नैतिकता
  3.1.3.2. काव्य की अवधारणा
  3.1.3.3. आलोचक और आलोचना
3.1.4. मैथ्यू आर्नल्ड के काव्य चिन्तन का अनुशीलन
3.1.5. सारांश
3.1.6. शब्दावली
3.1.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची
3.1.8. सम्बन्धित प्रश्न

3.1.0. उद्देश्य कथन

पाश्चात्य काव्यशास्त्र पाठ्यचर्या के खण्ड-3 'प्रमुख विचारक-2' की यह पहली इकाई है। इससे पहले खण्ड-2 में आपने अरस्तू, लोंजाइनस, विलियम वर्ड्सवर्थ और सैम्युअल टेलर कॉलरिज के विचारों की जानकारी ग्रहण की। पाश्चात्य विचारकों की इसी कड़ी में खण्ड-3 की पहली इकाई में आपके समक्ष मैथ्यू आर्नल्ड का काव्यशास्त्रीय चिन्तन प्रस्तुत है। वस्तुतः उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्वच्छंदतावाद के प्रति मोहभंग की स्थिति के परिणामस्वरूप एक युगान्तकारी परिवर्तन का संकेत मिल रहा था। ऐसे में जीवन मूल्यों में विघटन की प्रवृत्तियों से निपटने के लिए रचना कर्म और आलोचना को पुनः व्याख्यायित करने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। पाश्चात्य साहित्यालोचना के क्षेत्र में मैथ्यू आर्नल्ड जैसे विचारकों का आगमन भी तत्युगीन उसी परिदृश्य में होता है। प्रस्तुत इकाई पढ़ने के बाद आप –

3.1.0.1. मैथ्यू आर्नल्ड के काव्य चिन्तन में संस्कृति और नैतिकता की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे।
3.1.0.2. मैथ्यू आर्नल्ड के काव्य की अवधारणा को समझ सकेंगे।
3.1.0.3. आलोचक और आलोचना के सन्दर्भ में मैथ्यू आर्नल्ड के विचार जान सकेंगे।
3.1.0.4. मैथ्यू आर्नल्ड के काव्य चिन्तन का अनुशीलन कर सकेंगे।

3.1.1. प्रस्तावना

पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय परम्परा में स्वच्छंदतावादी आलोचना जिन आदर्शों, मूल्यों और प्रवृत्तियों को लेकर अवतरित हुआ और इनसे युक्त होकर कविता की जो आकृति सामने आई, उसे आगे चलकर नए समीक्षकों और नई समीक्षा दृष्टि की आवश्यकता महसूस हुई। वस्तुतः उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक आते आते पश्चिम में स्वच्छंदतावाद के प्रति आकर्षण नहीं रहा तथा जीवन मूल्यों के विघटन के बीच उलझे मनुष्य को उबारने के लिए कवि कर्म और आलोचना को पुन:व्याख्यायित करना अपेक्षित था। ऐसे में एक नई जीवन दृष्टि से अनुप्राणित आधुनिक अंग्रेजी आलोचना के क्षेत्र में मैथ्यू आर्नल्ड का पदार्पण होता है। उन्होंने अपनी बौद्धिकता व गम्भीर अध्ययन के बल पर पाश्चात्य साहित्य आलोचना के क्षेत्र में कविता की सक्रिय सामाजिक भूमिका का निवेदन किया। चूँकि, उन्होंने साहित्य को जीवन की आलोचना माना है, इसलिए वे केवल उसी साहित्य को प्राथमिकता देते हैं जो जीवन और समाज से सम्बद्ध हो। उनके विचार में जीवन और समाज से निरपेक्ष साहित्यिक सौन्दर्य का कोई मूल्य नहीं है। इस तरह उनके लिए कविता का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना है। हालाँकि, यहाँ यह तथ्य दृष्टि से ओझल नहीं किया जा सकता कि उनके काव्य चिन्तन का विकास शून्य में नहीं हुआ है तथा वे अपनी पूर्ववर्ती परम्पराओं से विच्छिन नहीं हैं।

3.1.2. मैथ्यू आर्नल्ड : व्यक्ति परिचय

कला और साहित्य में वस्तु और रूप के प्रश्न को लेकर बहुत समय से विवाद चलता आया है। इस प्रकार सवाल स्वाभाविक है कि साहित्य या काव्य में वस्तु तत्त्व प्रमुख होता है अथवा रूप तत्त्व। यह विवाद इस सीमा तक खींच गया है कि काव्य में वस्तु और रूप को प्रमुखता देते हुए कई भिन्न धारणाएँ बन गई हैं। यह स्थिति काव्य या कला के सही मूल्यांकन के लिए बाधक ही साबित हुई है। ऐसे परिदृश्य में मैथ्यू आर्नल्ड जैसे विचारकों ने संस्कृति और नैतिकता की प्रतिष्ठा करते हुए साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में किसी प्रकार के भ्रम को नहीं रहने दिया है।

3.1.2.1. व्यक्तित्व

मैथ्यू आर्नल्ड का जन्म 24 दिसंबर 1822 को हुआ। इनके पिता का नाम डॉ॰ टॉमस आर्नल्ड था जो कि रग्बी स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। मैथ्यू बचपन से ही अध्ययनशील प्रवृत्ति के थे तथा साहित्य में उनकी विशेष अभिरुचि थी। उन्होंने अपनी शिक्षा क्रमश: लेलेहम, रग्बी तथा ऑक्सफोर्ड में पूरी की। आगे चलकर वर्ष 1857 ई. में उनकी नियुक्ति ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रोफेसर (कविता) के पद पर हुई। मैथ्यू आर्नल्ड बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कविता, निबन्ध एवं आलोचना जैसी महत्त्वपूर्ण विधाओं में अत्यन्त उल्लेखनीय कार्य किया है जिसके अन्तर्गत काव्य में सामाजिक तथा मानवीय आधार के निमित्त संस्कृति और नैतिकता की व्यापक स्वीकृति मिलती है।

3.1.2.2. कृतियाँ

मैथ्यू आर्नल्ड कविता को संस्कृति और मूल्यों के अधिष्ठाता के रूप में स्वीकार करते हैं। इसलिए उन्होंने आजीवन जीवन और साहित्य की दूरी को पाटने के लिए अथक प्रयास किया है। वैसे मैथ्यू आर्नल्ड का आरम्भिक रचनात्मक रुझान काव्य लेखन की ओर था। 'द स्ट्रेंड रेवेलर' (1849), 'एम्पेडोक्लस ऑन एटना' (1852), 'पोयम्स बाई मैथ्यू आर्नल्ड' (1853), 'पोयम्स सेकेण्ड सीरीज' (1855), 'मेरोप' (1855) और 'न्यू पोयम्स' (1857) उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं। लेकिन समय बीतने के साथ कवि की बजाय उनके आलोचक रूप को अधिक ख्याति प्राप्त हुई है। उनके आलोचनात्मक निबन्धों के संग्रह 'एसेज़ इन क्रिटिसिज्म' का पहला भाग 1865 ई. में और दूसरा भाग 1888 ई. में प्रकाशित हुआ। वर्ष 1869 ई. में मैथ्यू आर्नल्ड के समस्त कृतित्व की केन्द्रीय रचना के रूप में एक संस्कृतिपरक कृति 'कल्चर एंड अनार्की' प्रकाशित हुई। धर्म की उदार व काव्यपरक व्याख्या के निहितार्थ उन्होंने अपनी 'लिटरेचर एंड डोगमा' (1873), 'गॉड एंड द बाइबल' (1875), 'एसेज़ ऑन चर्च एंड स्टेट' (1877) आदि रचनाओं में धर्म की हठधर्मिता का प्रबल विरोध किया है। उनकी दृष्टि में कुछ भी साहित्य की परिधि से बाहर नहीं है।

3.1.3. मैथ्यू आर्नल्ड का काव्य चिन्तन

पाश्चात्य काव्य चिन्तन की विकसित परम्परा में मैथ्यू आर्नल्ड का आगमन वस्तुतः उस समय होता है जब रोमांटिक युग पूरी तरह से समाप्त हो चुका था और विक्टोरियन काल अपनी पूरी पराकाष्ठा पर था। वैसे तो मैथ्यू आर्नल्ड से पहले पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय चिन्तन व विश्लेषण मूलत: एक विशिष्ट प्रकार की सर्जना और उसके साथ व्यक्त सैद्धान्तिक मान्यताओं के सन्दर्भ में ही हुआ था। लेकिन, मैथ्यू ने काव्य में नैतिकता और आदर्श को सम्बल बनाकर कविता और जीवन के अभूतपूर्व सार्थक प्रतिमान गढ़े जो आज भी साहित्य एवं कला जगत् में उनकी रचनात्मक प्रतिभा और विलक्षण व्यक्तित्व के प्रमाण हैं। उल्लेखनीय है कि अपनी मूल प्रकृति में उनके प्रतिमान अपने सामाजिक-मानवीय आधारों के साथ अपनी लोकोत्तर व्याख्याओं को छोड़कर, अपेक्षाकृत अधिक सम्पूर्ण बनकर यानी समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण में काव्य या साहित्य की सक्रिय भागीदारी का निर्देश देते हुए सामने आते हैं।

3.1.3.1. संस्कृति और नैतिकता

पश्चिम में औद्योगीकरण की तीव्र प्रगति अंग्रेजी साम्राज्य के लिए आर्थिक सम्पन्नता और वैभव के चरमोत्कर्ष का परिचायक थी, लेकिन भौतिक संसाधनों व उपलब्धियों के साथ-साथ नैतिक गिरावट, मूल्यहीनता और सांस्कृतिक पतन भी बढ़ता जा रहा था। यह परिवेश ही वस्तुतः मैथ्यू आर्नल्ड के लिए चिन्ता का विषय था। क्योंकि, वैज्ञानिक विकास के चलते भौतिकता से आक्रान्त उस युग में कविता व साहित्य के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगना शुरू हो गया था। उदाहरण के तौर पर तत्युगीन उपयोगितावादी दृष्टि के फलस्वरूप टॉमस लव

पीकॉक जैसे आलोचक तो कविता के अस्तित्व को ही पूरी तरह नकार चुके थे। उनका विश्वास था कि ज्ञान, विज्ञान और तर्क के उस युग में कविता के लिए कोई स्थान नहीं है।

ऐसे परिवेश में मैथ्यू आर्नल्ड ने सम्पूर्ण अराजकता और असन्तुलन के बीच काव्य को ही जीवन में नैतिक आदर्शों का अभिप्रेरक और संस्कृति का साधन बताया तथा विज्ञान और काव्य के अन्तर्द्वंद्व को उन्होंने नई दृष्टि से देखने व परिभाषित करने का उल्लेखनीय प्रयास किया। उनकी स्थापना में विज्ञान और कविता दो प्रतिनिधि शक्तियाँ नहीं, बल्कि एक-दूसरे की पूरक है। उन्होंने यह मत प्रकट किया कि कविता जीवन की व्याख्या, जीवन में सहानुभूति और उसे सम्बल प्रदान करने हेतु अधिकांश मानव जाति अन्तत: काव्य की ओर ही उन्मुख होगी और काव्य के बिना हमारा ज्ञान-विज्ञान अधूरा लगेगा तथा हमारे जीवन में धर्म एवं दर्शन का स्थापन्न कविता के द्वारा ही सम्भव हो सकेगा।

वस्तुतः वैज्ञानिक विकास के साथ तत्कालीन समाज में जन जीवन के प्रति जो एकांगी दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ था, मैथ्यू आर्नल्ड ने उसके विरोध में जीवन की समग्रता पर बल दिया। भौतिक व वस्तुगत सम्पन्नता के उस युग में वे दृढ़ता से नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रवर्तक बनकर अपने विचारों का प्रतिपादन करते रहे। और, साथ-ही-साथ कविता को इस सारे विघटन एवं संत्रास से मुक्ति का माध्यम स्थापित करते रहे।

मैथ्यू आर्नल्ड के विचारों में अपने युग का विश्लेषण प्रतिध्वनित होता है। वे तत्युगीन जन समाज की वृत्तियों से त्रस्त हैं और यह कहने में नहीं सकुचाते कि अभिजात वर्ग निर्मम, कठोर, अमानवीय व बर्बर हो गया है, मध्यम वर्ग भोग में लिप्त है तथा निम्न वर्ग सुषुप्तावस्था में है। अभिजात वर्ग तथा निम्न वर्ग से उन्हें कोई आशा और अपेक्षा नहीं है। लेकिन, मध्यम वर्ग की जड़ता को तोड़ने के लिए वह साहित्य और आलोचना से अपेक्षा करते हैं कि वह उसकी रुचि का परिष्कार करे, उसे सुसंस्कृत करे। इसलिए वे जन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्णता एवं समन्वयपरक दृष्टि का विकास करना चाहते हैं और उनके लिए संस्कृति ही पूर्णता का दूसरा नाम है। अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'कल्चर एंड अनार्की' के प्रथम अध्याय में वे संस्कृति को परिभाषित करते हैं। उनकी दृष्टि में संस्कृति पूर्णता का अध्ययन है, समग्रता का विश्लेषण है तथा बुद्धि और ईश्वर की इच्छा को सफल बनाना ही उसका उद्देश्य है। माधुर्य और आलोक उसके विशिष्ट गुण हैं। मानवमात्र के प्रति प्रेम और उसकी समस्याओं समझना संस्कृति के मुख्य भाग हैं। चूँकि, संस्कृति का उद्देश्य है जीवन में उदात्त मूल्यों तथा उद्देश्यों का सम्यक् प्रतिष्ठा करना, अत: जनजीवन में साध्य और साधन, स्थायी और अस्थायी, पूर्ण और अपूर्ण के भेद की विस्तृत व्याख्या संस्कृति का मुख्य ध्येय है, मुख्य प्रयोजन है। गोया, मैथ्यू आर्नल्ड की स्थापना में संस्कृति पूर्णता की प्रतिष्ठापक है तथा काव्य संस्कृति का अन्यतम साधन है। उन्हें विश्वास है कि तत्कालीन अराजकतापूर्ण स्थितियों में काव्य ही जीवन को नैतिक आदर्शों की ओर प्रेरित करता है और उसे सांस्कृतिक पूर्णता की ओर ले जाता है। अपनी इन्हीं धारणाओं के कारण वे स्वच्छंदतावादी मान्यताओं का खण्डन करते हैं और उसे काव्य के सांस्कृतिक लक्ष्य में बाधक मानते हैं।

उल्लेखनीय है कि मैथ्यू आर्नल्ड के लिए काव्य का प्रयोजन केवल मनोरंजन या आनन्द नहीं, अपितु वह सांस्कृतिक उन्नयन और परिष्करण का साधन है। अत: जिस कविता में आदर्श या उपदेश नहीं, वह उन्हें काम्य और स्वीकार्य नहीं है। इस आलोक में अतिशय गम्भीरता को काव्य का अन्यतम गुण मानते हुए वे प्राचीन अभिजात्यवादी सिद्धान्तों की पुन: स्थापना करने का सार्थक प्रयास करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में सुप्रसिद्ध विचारक अरस्तू उनके परम आदर्श थे जिन्होंने 'कामदी' की अपेक्षा 'त्रासदी' को महत्त्व दिया था।

विदित है कि रोमांटिक कवियों की भावप्रवण एवं संगीतमय लालित्यसे युक्त कविताएँ मैथ्यू आर्नल्ड द्वारा प्रतिपादित 'उत्तम कविता' की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। यही कारण है कि उन्होंने शैली, वॉयरन, कीट्स, कॉलरिज आदि कवियों की आलोचना की है। उनकी दृष्टि में सोफोक्लीस, होमर, दांते, गेटे, मिल्टन आदि जैसे कवियों का काव्य ही उत्तम है जो युग चेतना से सम्पन्न हैं। वस्तुतः प्राचीन काव्य का आग्रह मैथ्यू आर्नल्ड के चिन्तन में इस सीमा तक है कि उनके अनुसार कवियों को अपने विषय चयन के लिए भी प्राचीन कवियों से प्रेरणा लेनी चाहिए, क्योंकि उन्हें संदेह है कि तत्कालीन युग जिसमें कि नैतिकता व भव्यता नहीं हैं, काव्य हेतु उपयुक्त विषय मिल सकते हैं।

मैथ्यू आर्नल्ड ने अपने आदर्श और साहित्यिक प्रतिमान प्राचीन साहित्य से ही ग्रहण किए हुए प्रतीत होते हैं। इसलिए उन्हें यूनानी साहित्यक आदर्शों का उद्धारक भी कहा जाता है। प्राचीन आदर्शों को ग्रहण कर उन्होंने एक नवीन आलोचना पद्धति का विकास किया जो कि बाद के आलोचकों के लिए अनुकरणीय बनी। इतना ही नहीं, उन्होंने काव्य या साहित्य को अपने युग और परिवेश से अभिन्न रूप में देखा और परखा। इस तरह कहना सही होगा कि इस परिदृश्य में मैथ्यू आर्नल्ड परम्परा और आधुनिकता के मिलन बिन्दु पर खड़े दिखाई देते हैं। किन्तु एक विडम्बना यह भी है कि आलोचक के रूप में उन्होंने जिस गम्भीरता या उपदेशात्मता की वकालत की, उनकी अपनी सभी कविताएँ भी उसकी साक्ष्य नहीं देतीं। इस प्रकार वे वैचारिकता और भावना के द्वन्द्व में फँसे हुए लगते हैं। इसलिए उनका पुनर्मूल्यांकन करते हुए प्रो॰ निर्मला जैन स्पष्ट कहती हैं कि "आर्नल्ड को अंग्रेजी के उस परवर्ती रोमांटिक आलोचक के रूप में देखा गया जिसमें अर्ध-क्लासिकी और अर्ध-रोमानी चेतना का संगम मिलता है। वे क्लासिकी तेवर और रोमांटिक मिजाज से लैस ठेठ विक्टोरियन थे"।

वस्तुत: मैथ्यू आर्नल्ड के सम्मुख विज्ञान के प्रभुत्व और भौतिकता के वर्चस्व की जो चुनौती थी, उसका उत्तर वे सामाजिक आदर्शों व नैतिक मूल्यों के प्रतिस्थापन द्वारा ही दे सकते थे। इसलिए उन्होंने काव्य में नैतिक मूल्यों के प्रतिस्थापन पर विशेष जोर दिया। उन्होंने यहाँ तक कह डाला कि नैतिक विचारों के विरुद्ध लिखी गई कविता जीवन के प्रति विद्रोह की कविता है और नैतिकता के प्रति उदासीन कविता जीवन के प्रति उदासीन कविता है।

इस प्रकार मैथ्यू आर्नल्ड काव्य को मानवमात्र को सांत्वना देने वाले, संस्कृति के अन्यतम साधन व नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक के रूप में ईमानदारीपूर्वक प्रस्तावित करते हैं। हालाँकि, उनकी कविता का आदर्श तत्कालीन समाज न होकर ऐसा प्राचीन काव्य ही था जिसमें जीवन की महानता और भव्यता पर बल हो।

3.1.3.2. काव्य की अवधारणा

मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार 'कविता जीवन की आलोचना' है। उनके अनुसार कवि की महत्ता इस बात में है कि वह अपने जीवन सम्बन्धी विचारों को इस सवाल कि 'जीवन कैसे जीना चाहिए' से कितने सशक्त एवं सुन्दर ढंग से जोड़ पाता है। इस प्रकार उनकी दृष्टि में उत्तम काव्य वही है जिसकी विषयवस्तु संस्कृति और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापक हो, जो मनुष्य के संस्कारों को आन्दोलित करे तथा जिसकी शैली भी भव्य हो।

विवेचनार्थ, मैथ्यू आर्नल्ड अपने काव्यशास्त्रीय चिन्तन में स्वच्छंदतावादी मान्यताओं का पूरी तरह खण्डन करते हैं। लेकिन, प्राचीन यूनानी चिन्तन व सिद्धान्तों के प्रति उनमें आग्रह का भाव सहज ही परिलक्षित होता है। होमर और अरस्तू के विचारों के प्रति उनका विशेष लगाव है। वस्तुतः उन्होंने काव्य में स्वाभाविकता, सरलता और क्लासिक गुणों के साथ आलोचना की स्वायत्त सत्ता पर अधिक बल दिया है। उनके अनुसार काव्य वही स्थायी होता है जिसमें स्थायी भावों-संवेदनाओं की प्राण प्रतिष्ठा हो। इस आलोक में वे काव्य कर्म में मुख्यत: चार बातों पर विशेष बल देते हैं; यथा –

1) काव्य की विषय वस्तु महत्त्वपूर्ण हो।
2) रचना प्रक्रिया के क्रम में संरचनात्मक अन्विति, अनुपात तथा सामंजस्य पर ध्यान देना चाहिए।
3) रचना में भव्य शैली का प्रयोग आवश्यक है।
4) आनन्द के साथ-साथ कविता नैतिक उन्नयन का दायित्व भी पूरा करे।

अस्तु, मैथ्यू आर्नल्ड काव्य में बारम्बार वस्तु और रूप के सामंजस्य पर बल देते हैं। और, सबसे खास बात यह है कि सांस्कृतिक उन्नयन और भाव परिष्कार को ही वे काव्य का प्रयोजन स्वीकार करते हैं। उनकी मानयता है कि काव्य का मूल्यांकन बाह्य मानदण्डों से नहीं किया जाना चाहिए। आलोचना रचना केन्द्रित हो और रचना केन्द्रित आलोचना के मानदण्ड रचना के भीतर से ही स्फुटित होना चाहिए। चूँकि, 'काव्य प्रयोजन' मैथ्यू आर्नल्ड के चिन्तन के केन्द्र में है, इसलिए उनका आग्रह समाज में कविता की सक्रिय भूमिका पर है। उनकी स्थापना में कविता ही जीवन को समझने की दृष्टि देती है और उसे व्याख्यायित करती है। चूँकि, काव्य से सम्बद्ध सभी सवाल अनिवार्यत: जीवन से जुड़े हुए होते हैं, इसलिए कवि की महत्ता इस बात में है कि उसके साहित्य ने युग की साहित्यिक सामाजिक आवश्यकताओं को किस सीमा तक पूरा किया है।

अथच्, कविता द्वारा सामाजिक सांस्कृतिक आदर्श की प्रतिष्ठा के निमित्त मैथ्यू आर्नल्ड विषय के चयन पर अधिक बल देते हैं। उनकी दृष्टि में मानव के कार्य व्यापार समस्त राष्ट्रों में सदा ही काव्य के शाश्वत विषय रहे हैं। इसलिए काव्य विषय का महत्त्व उसकी समकालीनता पर नहीं, अपितु उसकी महानता पर निर्भर है। अपने काव्यशास्त्रीय विवेचन में उन्होंने 'काव्य सत्य' एवं 'काव्य सौन्दर्य' के निर्धारित नियमों के अन्तर्गत ही कविता को जीवन की आलोचना स्वीकार करते हैं। 'काव्य सत्य' से उनका अभिप्राय विषय वस्तु की मूल्यवत्ता से है, जबकि 'काव्य सौन्दर्य' अभिव्यंजना सौन्दर्य एवं लालित्य का पर्याय है।

सारत: मैथ्यू आर्नल्ड के लिए उत्तम काव्य वही है जिसमें महान् कार्य तथा उत्कृष्ट शैली का संयोजन हो। लेकिन, शैली की उत्कृष्टता केवल कुछ वाक्यांशों तक ही सीमित नहीं होती, बल्कि सम्पूर्ण काव्य विधान में उत्कृष्ट शैली का प्रयोग अपेक्षित है। कुल मिलाकर वे काव्य में सरल एवं स्वच्छ शैली के पक्षपाती हैं।

3.1.3.3. आलोचक और आलोचना

कविता के मूल्यांकन या आलोचना के सम्बन्ध में मैथ्यू आर्नल्ड का मानना है कि आलोचना ही महान् विचारों के सम्प्रेषण द्वारा उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए उर्वर भूमि तैयार करती है, इसलिए आलोचना काव्य से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस सन्दर्भ में आलोचक की भूमिका केवल कविता के मूल्यांकन तक ही सीमित नहीं है, अपितु एक चिन्तक होने के नाते उस पर सांस्कृतिक विकास का महत्त्वपूर्ण दायित्व भी होता है।

मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार आलोचना का लक्ष्य अपने युग के समक्ष सही एवं उच्च आदर्श प्रस्तुत करना है। इस प्रकार आलोचना का उद्देश्य व्यक्ति को उसकी संकीर्णताओं, तुच्छताओं से मुक्त कर निरपेक्ष सौन्दर्य की ओर आकृष्ट करना और उसे पूर्णता की ओर उन्मुख करना है। इतना ही नहीं, कविता और आलोचना के सापेक्षिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा है कि इस परिप्रेक्ष्य में आलोचना के तीन महत्त्वपूर्ण कार्य सहज ही अनुभूत हैं; यथा –

(i) जीवन और काव्य की महान् उपलब्धियों को समझना।
(ii) उन उपलब्धियों के विचारों को सशक्त अभिव्यक्ति देना।
(iii) जीवन में उत्कृष्ट विचारों का संचार कर ऐसे परिवेश का निर्माण करना जो महान् साहित्य को अभिप्रेरित कर सके।

मैथ्यू आर्नल्ड आलोचना की तीन पद्धतियों का उल्लेख करते हैं – पहला, वैयक्तिक; दूसरा, ऐतिहासिक तथा तीसरा, वास्तविक। हालाँकि, इनमें से प्रथम दोनों को वे आलोचना नहीं मानते हैं। उनके लिए आलोचना का तीसरा यानी वास्तविक रूप ही मान्य है। चूँकि, वैयक्तिक आलोचना में आलोचक की व्यक्तिगत रुचि तथा निजी प्रतिक्रिया महत्त्वपूर्ण हो जाती है, इसलिए वैयक्तिक आलोचना द्वारा रचना का शुद्ध एवं सार्थक मूल्यांकन नहीं हो सकता।

ऐतिहासिक आलोचना के सम्बन्ध में उनकी धारणा है कि साहित्यिक प्रवृत्तियों व उसके विकास क्रम के सोपानों का विवेचन इतिहास का विषय है, जबकि आलोचना रचना के गुण-दोषों का विवेचन करती है। चूँकि, ऐतिहासिक आलोचना काव्य के अन्तर्निहित वैशिष्ट्य को उद्घाटित करने में समर्थ नहीं होती है, इसलिए यह अनुकरणीय नहीं है।

मैथ्यू आर्नल्ड वस्तुतः वास्तविक आलोचना के पक्षपाती हैं। उनकी दृष्टि में वास्तविक आलोचना ही सच्ची आलोचना है। यही कारण है कि वे वास्तविक आलोचना के लिए आलोचक की तटस्थता, निष्पक्षता व

निस्संगता पर बल देते हैं। साथ ही वे आलोचक की सृजन प्रतिभा और सृजन क्षण के परस्पर सम्बन्धों की पहचान के हिमायती भी हैं । हालाँकि, उनकी दृष्टि में निष्पक्षता का आशय युग निरपेक्षता नहीं है, क्योंकि तत्युगीन अराजकता से फैली सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध सांस्कृतिक पूर्णता व उसको आत्मसात् करने वाली आलोचना ही निष्पक्ष और वास्तविक आलोचना है।

3.1.4. मैथ्यू आर्नल्ड के काव्य चिन्तन का अनुशीलन

साहित्य या काव्य तथा आलोचना सम्बन्धी मैथ्यू आर्नल्ड के विचारों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि वे मूलत: एक आदर्शवादी और नीतिवादी समीक्षक थे। काव्य को वे समाज तथा देश और जाति के उत्थान का एक प्रभावी व सशक्त माध्यम स्वीकार करते हैं। किन्तु, अपनी नीतिवादी या आदर्शवादी विचारणा को वे इतनी दूरी तक नहीं ले गए हैं कि साहित्य या आलोचना की मूल प्रकृति ही उनकी दृष्टि से ओझल हो गई हो। यही कारण है कि वे आदर्श, नीति और उपदेश की बात करते हुए काव्य को जीवन की आलोचना मानते हैं। ज्ञातव्य है कि मैथ्यू आर्नल्ड को प्रथम आधुनिक आलोचक माना गया है । क्योंकि, अंग्रेजी की आधुनिक आलोचना का सूत्रपात वस्तुतः उनके आगमन के साथ ही होता है। उनकी दृष्टि में आलोचना दर्शनशास्त्र की शाखा न होकर एक स्वायत्त विधा है। उन्होंने काव्य को जीवन की आलोचना माना है। उनके अधिकांश निबन्धों में प्राय: यह बात खुलकर सामने आई है कि जीवन के व्यापक सौन्दर्य से युक्त, मानव के अनुभव-सत्यों से सम्पन्न काव्य जीवन की आलोचना अथवा व्याख्या है।

वस्तुतः वे काव्य को जीवन की आलोचना कहकर कलावाद-रूपवाद का खण्डन करना चाहते हैं। उनके मतानुसार काव्य में जीवन की समस्याओं व वास्तविकताओं का चित्रण अनिवार्यत: होना चाहिए। रचनाकार का काम युग परिवेश में व्याप्त विचारों के संश्लेषण और उद्घाटन के अतिरिक्त और कुछ नहीं होना चाहिए।

मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार समाज एवं सांस्कृतिक उत्कर्ष के निमित्त कविता एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है। उन्होंने काव्य में जीवन की गहराई और व्यापकता दोनों को विस्तार दिया है। उनकी प्रबल धारणा है कि काव्य की सीमा का विस्तार धर्म, संस्कृति, शिक्षा आदि सभी तक है। इस अर्थ में काव्य विज्ञान का विरोधी नहीं, अपितु उसका पूरक है, क्योंकि जैसे-जैसे विज्ञान की उन्नति होती जाएगी, वैसे वैसे कविता की भूमिका का महत्त्व भी बढ़ता जाएगा। यही कारण है कि वे अपनी पूरी विचारधारा व चिन्तन में भावातिरेक और वैयक्तिकता से ग्रस्त होने के कारण 'प्रगीतकाव्य' का अपने ढंग से आलोचना करते हैं तथा 'प्रबन्ध काव्य' को ही उत्कृष्ट काव्य मानते हैं।

कहना सही होगा कि मैथ्यू आर्नल्ड एक प्रकार से कविता और आलोचना दोनों के संकीर्ण दायरों को तोड़कर उन्हें एक विस्तृत आयाम प्रदान किया है। लेकिन वे आलोचना से परे नहीं हैं। सुप्रसिद्ध विचारक टी. एस. एलियट ने कहा है कि आर्नल्ड न तो प्रतिक्रियावादी हैं और न ही क्रान्तिकारी। वे एक युग के वैसे ही प्रतिनिधि हैं जैसे कि उनके पहले पहले ड्राइडन और जॉनसन थे। इतना ही नहीं, एलियट ने उन्हें प्रमुखतया एक शिक्षक,

आलोचक की अपेक्षा आलोचना का प्रचारक स्वीकार किया है और कहा है कि आर्नल्ड ने हमेशा कविता की महानता के विषय में ही चिन्तन किया है। कविता के खरेपन को लेकर वे उतना गम्भीर नहीं दिखते हैं।

मैथ्यू आर्नल्ड के विचार की आलोचना इस आधार पर भी की जाती है कि वे काव्य हेतु उपयुक्तविषय-चयन की चर्चा करते हुए 'पुरातन', 'शाश्वत' या 'सनातन' पर इतना अधिक बल देते हैं कि नवीन विषयों की शक्ति या सम्भावनाओं की बिल्कुल उपेक्षा कर देते हैं। वस्तुतः लोकमंगल और नैतिकता के उत्साह में वे अपने वर्तमान से इतने आहत थे कि उन्होंने आधुनिकता के नाम पर यूनानी आभिजात्यवादी साहित्य के गुणों को ही फिर से जीवित करने का प्रयास करते हैं।

हालाँकि, तमाम आलोचनाओं के बावजूद यह सत्य है कि मैथ्यू आर्नल्ड के लिए कविता धर्म और दर्शन का प्रतिस्थापन है, जीवन की आलोचना है। वे संस्कृति के साधन के रूप में ही कविता पर विचार करते हैं। उनके साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक सरोकारों ने कविता के उद्देश्यों को ही विस्तृत नहीं किया, अपितु आलोचना पर भी नए दायित्वों को स्पष्ट किया। परिणामस्वरूप आलोचना केवल काव्य तक ही सीमित नहीं रही, वह जीवन सापेक्ष हो गई तथा धर्म, संस्कृति, दर्शन सभी कुछ उसके दायरे में समाहित हो गया। कुल मिलाकर मैथ्यू आर्नल्ड के काव्य चिन्तन में जिस दृढ़ता और प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं, वे कई मायनों में अनुकरणीय हैं।

3.1.5. सारांश

सारत: मैथ्यू आर्नल्ड का काव्यशास्त्रीय चिन्तन बहुत स्पष्ट है। काव्य की श्रेष्ठता के निर्धारण पर वे आजीवन विचारशील रहे। आर्नल्ड ने बहुत विस्तार से इस तथ्य का विवेचन किया है कि साहित्य के इतर मानदण्ड साहित्य के विवेचन व मूल्यांकन में बाधक हैं। राजनीतिक-ऐतिहासिक पूर्वाग्रहों से ग्रस्त आलोचना साहित्य के साथ न्याय नहीं कर सकती। इसलिए वे आलोचक को निस्संग होने की वकालत करते हैं। इतना ही नहीं, वे अपनी प्रमुख स्थापनाओं में समकालीन जीवन की अपेक्षा प्राचीन कार्य व्यापारों के महत्त्व की प्रतिष्ठा करते हैं। उनकी दृष्टि में मानव के कार्य व्यापार समस्त राष्ट्रों में सदा ही कविता के शाश्वत विषय रहे हैं। उनके लिए उत्तम काव्य वही है जो जीवन के उदात्त एवं व्यापक विचारों को प्रस्तुत करने में सक्षम हो। इसलिए उन्होंने काव्य को मानवमात्र को सांत्वना देने वाले, संस्कृति के अन्यतम साधन व नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक के रूप में प्रस्तावित किया है।

3.1.6. शब्दावली

आक्रान्त	:	भयभीत
उन्नयन	:	उत्कर्ष
परिष्करण	:	शुद्धिकरण
शाश्वत	:	कालजयी

3.1.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची

1. सिंह, रामसेवक, मैथ्यू आर्नल्ड, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना.
2. जैन, निर्मला, काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. गुप्त, शान्ति स्वरूप, पाश्चात्य आलोचना के काव्य सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. शर्मा, डॉ॰ देवेन्द्रनाथ, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
5. जैन, निर्मला, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. श्रीवास्तव, अर्चना, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. सिंह, विजय बहादुर, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
8. भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला.

3.1.8. सम्बन्धित प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार संस्कृति और आलोचना किस प्रकार एक दूसरे के पूरक हैं ?
2. काव्य के उत्कृष्ट विषय पर आर्नल्ड के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
3. "अंग्रेजी साहित्य में आर्नल्ड का महत्त्व ऐतिहासिक है"। प्रकाश डालिए।
4. आर्नल्ड ने वैयक्तिक आलोचना को हेय क्यों मानते हैं ?
5. साहित्य के इतिहास और साहित्य की आलोचना में भेद कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "महान् काव्य के लिए विषय वस्तु उदात्त होनी चाहिए और शैली भव्य"। आर्नल्ड के इस कथन पर प्रकाश डालिए।
2. मैथ्यू आर्नल्ड की आलोचना दृष्टि का मूल्यांकन कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार काव्य का मुख्य लक्ष्य है –
   (a) मनोरंजन
   (b) आनन्द
   (c) सांस्कृतिक उन्नयन एवं परिष्करण
   (d) इनमें से कोई नहीं

2. 'क्रॉमवेल' के रचयिता हैं –
   (a) अरस्तू
   (b) विलियम वर्ड्सवर्थ
   (c) सैम्युअल टेलर कॉलरिज
   (d) मैथ्यू आर्नल्ड

3. "कविता जीवन की आलोचना है"। यह मत किसका है ?
   (a) कॉलरिज
   (b) मैथ्यू आर्नल्ड
   (c) लोंजाइनस
   (d) विलियम वर्ड्सवर्थ

4. मैथ्यू आर्नल्ड ने काव्य का अधिष्ठाता किसे माना है ?
   (a) धर्म और राजनीति
   (b) समाज और संस्कृति
   (c) संस्कृति और मूल्य
   (d) इनमें से कोई नहीं

5. मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार काव्य का आशय है –
   (a) जीवन की आलोचना
   (b) जीवन की पुन:व्याख्या
   (c) जीवन का समग्रता से निरीक्षण-परीक्षण
   (d) उपर्युक्त सभी

उपयोगी वेबसाइट्स :

01. http://epgp.inflibnet.ac.in/ahl.php?csrno=18
02. http://www.hindisamay.com/
03. http://hindinest.com/
04. http://www.dli.ernet.in/
05. http://www.archive.org

❖❖❖